भगवान का आदेश अंतिम सत्य

• प्रो. श्रीकांत नरगट्टे, हुपरी (कोल्हापुर)

कहा जाता है, योग द्वारा भगवान से वार्तालाप किया जा सकता है। इस बात पर शुरू में यकीन नहीं था लेकिन जैसे-जैसे ज्ञान मार्ग की यात्रा आगे बढ़ी, अनेकानेक दिव्य अनुभव होने लगे। उनमें से एक अनुभव का वर्णन कर रहा हूँ।

विचारधाराओं का संघर्ष

मुझे फरवरी 1990 में, माउंट आबू में, इंटरनेशनल कांफ्रेंस के दौरान ज्ञान प्राप्त हुआ। अलौकिक जीवन की यात्रा में अनेक नये-नये अनुभव होने लगे। मानवीय जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए इस ईश्वरीय ज्ञान का होना बहुत ही ज़रूरी लगा। भारतीय सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद स्थानीय डी.एस. गडगे कॉलेज में इतिहास का प्राध्यापक नियुक्त हो गया। सब कुछ ठीक-ठाक चलने लगा। लौकिक परिवार में पत्नी, दो बच्चे और माँ, हम पाँच प्राणी थे। ज्ञान में आए कुछ ही महीने हुए थे। परिवार में कभी-कभी अलग-अलग विचारधाराओं का संघर्ष होने लगा। धर्मपत्नी को यह ईश्वरीय ज्ञान नहीं भाया। नौबत यहाँ तक आ गई कि वह दोनों छोटे बच्चों को छोड़कर मायके चली गई। पाँच-छह साल गुजर गये लेकिन कोई समाधान नहीं हो पाया।

शिव बाबा से राय लेने का संकल्प

बच्चों को संभालना वृद्ध माँ को कठिन लगने लगा। मेरे लिए भी नौकरी, खेती और बच्चों की संभाल – सबमें संतुलन रखना मुश्किल होने लगा। दिनों-दिन तनाव बढ़ने लगा। रिश्तेदारों तथा कॉलेज के स्टाफ में चर्चा होने लगी और दूसरी शादी का प्रस्ताव सामने आने लगा, मुझे दूसरी शादी के लिए तैयार भी किया गया। एक अच्छी पढ़ी-लिखी, नौकरी करने वाली लड़की भी तैयार हो गई। मैंने भी हालात और तत्कालीन समस्याओं को देखकर अनुमति दे दी पर अंतर्मन कहता रहा कि जब पवित्र और आदर्श जीवन ही मेरा लक्ष्य है तो क्यों न इस बात पर फिर से विचार किया जाए। पर सच्ची सलाह कौन दे, यह प्रश्न सामने था। अंत में सोचा, चलो, बाबा की राय भी जान ली जाए। लेकिन परमात्मा तो निराकार है, वह कैसे राय दे सकता है?

अमृतवेले की चमत्कारिक अनुभूति

इस विषय पर मैंने अपने मित्र वरिष्ठ ब्रह्माकुमार वसंत भाई जी से वार्तालाप किया। उन्हें भी तरस आया। मुझे विश्वास था, भाई जी की सलाह सही हल निकाल देगी। उन्होंने इस संबंध में सभी अच्छे-बुरे परिणाम

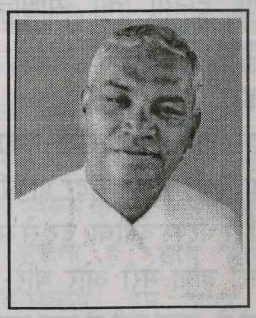

समझाये। फिर कहा, भाई जी, अंतिम राय तो बाबा से ही लें तो अच्छा होगा। उन्होंने एक बड़ी अच्छी युक्ति सुनाई, 'भाई, आप कुछ दिन अमृतवेले के समय इस विषय पर बाबा से वार्तालाप करें। इसके लिए स्थान एक हो, समय एक हो, विषय एक हो, फिर परिणाम आपको मिल ही जायेगा।'

भाई जी की इस सलाह के अनुसार हमने अमृतवेले की साधना आरंभ की। पाँच दिन, पंद्रह दिन, पच्चीस दिन बीत गये। कोई सही हल नहीं मिल पाया। लेकिन मुझे दृढ़ निश्चय था कि कुछ भी हो, बाबा का संकेत अंतिम सत्य समझ कर स्वीकार करना ही है। मुझे लगा कि बाबा मेरे जीवन की समस्या को देखकर मेरे लौकिक विचारों से अवश्य सहमत होंगे। अमृतवेले के योगाभ्यास का सत्ताइसवाँ दिन आया। सुबह चार बजे के बाद के 40 मिनट का समय मेरे लिए अद्‌भुत और भाग्यशाली सिद्ध हुआ। तीसरे नेत्र से बाबा ने ऐसा अद्‌भुत नज़ारा दिखाया,